(1.) परीक्षण प्रकियाऐं **(Testing Procedures):-**

(a.) लिखित , मौखिक व प्रयोगात्मक परीक्षाऐं

(b.) बुद्धि, सृजनात्मकता, रूचि, मूल्य, व्यक्तित्व, अभिक्षमता आदि परीक्षण

(2.) स्वंय आलेख उपकरण **(Self-report Techniques):-**

(a.) प्रश्नवाली

(b.) आत्मकथा

(c.) व्यक्तिगत डायरी

(d.) साक्षात्कार

(e.) वार्त्तालाप

(3.)निरीक्षण उपकरण **(Observation Techniques):-**

(a.) जांच सूची

(b.) निर्धारण मापनी

(c.) वृतान्त अभिलेख **(Anecdotal record)**

(d.) समाजमितीय विधि

(e.) अनुमान विधि

(f.) संचयीं आलेख

(4.) प्रक्षेपी विधियां **(Projective Techniques):-**

(a.) टी. ए. टी

(b.) सी. ए. टी

(c.) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण

(d.) वाक्य–पूर्ति परीक्षण

(e.) शब्द–साहचर्य विधि

Scanned by CamScanner

(1.) परीक्षण प्रकियाऐं (Testing Procedures):-

परीक्षण प्रकियाओं के अन्तर्गत मूल्यांकन के लिए उस उपकरण का प्रयोग किया जाता है जिसकी सहायता से किसी व्यक्ति के एक निश्चित समय के व्यवहार का अध्ययन अध्ययनकर्ता करते है। ये परीक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुणों का मापन करने में महत्वपूर्ण होता है, जो कि निम्नलिखित है–

(a.) लिखित , मौखिक व प्रयोगात्मक परीक्षाऐं:–

लिखितः– लिखित परीक्षाओं के माध्यम से छात्र के ज्ञान का आंकलन किया जाता है कि वह किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में किसी जानकारी रखता है। लिखित परीक्षाऐं छात्र के सैद्धान्तिक ज्ञान के सदंर्भ में ज्ञानात्मक पक्ष के शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। लिखित परीक्षाऐं मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है–निबन्धात्मक परीक्षाऐं परीक्षाएं तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षाएं।

निबन्धात्मक परीक्षाऐं में परीक्षाओं में परीक्षार्थी को उत्तर लिखने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। इन परीक्षाओं के माध्यम से छात्र की लेखन क्षमता, निर्णय शक्ति, तर्कपूर्ण चिंतन, व्याख्या कौशल व भाषा–शैली का मूल्यांकन किया जाता है। जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में छात्रों को उत्तर देने की पूर्ण स्वतंत्रता नही होती है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा में छात्रों को प्रश्न के उत्तर देने के लिए चार या पांच विकल्प दिए होते है। उन्हीं चार या पांच में प्रश्न के उत्तर देने होते है। अतः निबन्धात्मक परीक्षाओं की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं द्वारा प्राप्त परिणाम अधिक विश्वसनीय होता है।

मौखिक :– मौखिक परीक्षा का प्रयोग निम्न कक्षाओं, उच्च कक्षाओं व प्रतियोगिता परीक्षाओं में की जाती है। मौखिक परीक्षाओं में छात्रों से मौखिक प्रश्न किये जाते है, जिसका जबाब छात्र मौखिक रूप से देते है। इन मौखिक जांच परीक्षण के द्वारा छात्रों के भाषा कौशल जिसमें उच्चारण, भाषण व अभिव्यक्ति शैली जांची जाती है। साथ ही छात्रों का आत्मविश्वास, विषयों में छात्रों की जानकारी व उसके प्रयोग का ज्ञान, आदि का मापन किया जाता है। मौखिक परीक्षण में परीक्षक व छात्र दोनो एक–दूसरे के आमने सामने होते है। इसलिए परीक्षक को परीक्षार्थियों को व्यक्तिगत गुणों का आकलन करने का अवसर मिलता है। इन परीक्षणों द्वारा प्राप्त परिणामों में छात्रसें के आत्मनिष्ठता का पता चलता है।

प्रयोगात्मक परीक्षाएं :– प्रयोगात्मक परीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य छात्र के शारीरिक तथा कियात्मक कौशलों की जानकारी प्राप्त करना कि छात्र को किसी विषय का कितना व्यवहारिक

Scanned by CamScanner

ज्ञान प्राप्त हुआ है। प्रयोगात्मक परीक्षा में विज्ञान विषय, भूगोल, मनोविज्ञान आदि विभिन्न विषयों से सम्बधित प्रायोगिक परीक्षा का मूल्यांकन किया जाता है।

(b.) बुद्धि, सृजनात्मकता, रूचि, मूल्य, व्यक्तित्व, अभिक्षमता आदि परीक्षण :– परीक्षण प्रकियाओं के अन्तर्गत अनेक वस्तुनिष्ठ परीक्षण आते है– जैसे बुद्धि परीक्षण, व्यक्तिगत परीक्षण, रूचि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, अभिक्षमता परीक्षण, अभिवृति परीक्षण आदि परीक्षण आते है। इन परीक्षणों के माध्यम से बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का आंकलन किया जाता है। जैसेः– बुद्धि परीक्षण के माध्यम से ही छात्रों के औसत बुद्धि व मंद बुद्धि तथा अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी का मूल्यांकन किया जाता है।

(2.) स्वंय आलेख उपकरण (Self-report Techniques):-

मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है अपनी आवश्यकतानुसार कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। परीक्षणकर्ता मनुष्य की इन्हीं आंकडों जैसे वह क्या सेचता है, कब प्रसन्न होता है, कौन–सी चीजें उसे कष्ट देती है आदि सम्बधित पहलूओं पर व्यक्ति से, मूल्यांकन हेतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सूचनाएं ली जाती है। मूल्यांकन के अन्तर्गत आने वाले उपकरण व प्रविधियां निम्नलिखित है–

(a.) प्रश्नवाली (Questionnaire):– प्रश्नावली का प्रयोग अनुसंधान के प्रमाणों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह विधि अत्यन्त सरल विधि है। इसके माध्यम से शिक्षक छात्रों की रूचियों, अभिवृतों तथा अभिक्षमताओं के विकास से सम्बन्धित अनेक सूचनाएं प्राप्त करता है। प्रश्नावली का मूल्यांकन करते समय परीक्षणकर्ता को इन बातों का ध्यान रखना पड़ता है कि प्रश्न अनुसंधान से सम्बन्धित व सरल एवं निश्चित कम में हो, तभी परिणाम साकारात्मक होगा।

(b.) आत्मकथा (Autobiography):– आत्मकथा भी मूल्यांकन की एक महत्वपूर्ण स्वंय आलेख प्रविधि है। आत्मकथा में मूल्यांकनकर्ता मूल्यांकन कर रहे व्यक्ति से अपनी जीवन पर एक आलेख लिखने को कहता है। जब प्रयोज्य (व्यक्ति) अपनी आत्मकथा लिखतहा है तो मूल्यांकनकर्ता उसका अध्ययन करके प्रयोज्य के व्यक्तित्व के गुणों का मूल्यांकन किया जाता है।

आत्मकथा विधि के मुख्य चार चरण होते है–

(i) योजना बनाना (Planning the Case study)

Scanned by CamScanner

(ii) आंकड़े एकत्रित करना (Data Collection)
(iii) व्यक्ति–वृत लिखना (Writing up the Case)
(iv) निदान व मूल्यांकन (Remedy and Evaluation)।

(c.) व्यक्तिगत डायरी (Personal Dairy) :– व्यक्तिगत डायरी में व्यक्ति अपने जीवन में औपचारिक व अनौपचारिक घटनाओं का कमबद्ध विवरण डायरी में लिखता है। जिसमें वें घटना होने की तारीख व समय को भी अंकित करता है। विभिन्न शोधकर्ता किसी व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत डायरी के अध्ययन के आधार पर उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का आंकलन करने में समर्थ हो सकता है। व्यक्तिगतम उायरी की सूचनाओं से सम्बन्धित व्यक्ति की उपब्धियों, विशिष्ट गुणों, व्यक्तित्व के सकारात्मक व नकारात्मक पहुलओं का भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

(d.) साक्षात्कार (Interview) :– साक्षात्कार का शाब्दिक अर्थ होता है– छात्रों का आंतरिक मूल्यांकन करना। साक्षात्कार में सारा कार्य मौखिक होता है। तथा साक्षात्कार लेने वाला और साक्षात्कार देने वाला दोनों आमने–सामने उपस्थित होकर साक्षात्कार देता व लेता है। विद्यालयों में छात्रों के उत्तम मूल्यांकन के लिए साक्षात्कार प्रमुख विधि है। साक्षात्कार हेतु विभिन्न व्यक्तिगत विशेषताओं को बाहर प्रकट करने का मुख्य साधन है।

(e.) वार्त्तालाप (Discussion):– वार्तालाप या वाद–विवाद प्रविधि मूलयांकन की एक महत्वपूर्ण विधियां है। जिसमें शिक्षक और छात्र परस्पर मिल–जुलकर पाठ्यकम से सम्बन्धित किसी प्रकरण, प्रश्न या समस्या के उपर स्वतंत्रतापूर्वक सामूहिक वातावरण में अपने विवेकपूर्ण विचारों का आदान–प्रदान करते है। तथा समस्या के समाधान के लिए आम सहमति द्वारा किसी निर्णय पर पहुंचने की कोशिश की जाती है।

किसी भी वार्तालाप, वाद–विवाद या विचारगोष्ठी की सफलता एक कुशल मूल्यांकनकर्ता पर निर्भर करता है। इसी शिक्षक को चाहिए कि वह वाद–विवाद प्रतियोगिता कराने से पहले सभी महत्वपूर्ण तथ्यों, विचारों, टिप्पणियों, निर्णय, निष्कर्षो आदि को अपनी डायरी में नोअ कर लें, ताकि उन्हें मूल्यांकन करने में आसानी हो।

Scanned by CamScanner